

Samyak
An Institute For Civil Services

THINK IAS

JOIN SAMYAK

Samyak
An Institute For Civil Services

DAILY
CURRENT नाना

12 अगस्त

 **9875170111**

 **SAMYAK IAS, NEAR RIDDHI-SIDDHI, JAIPUR**

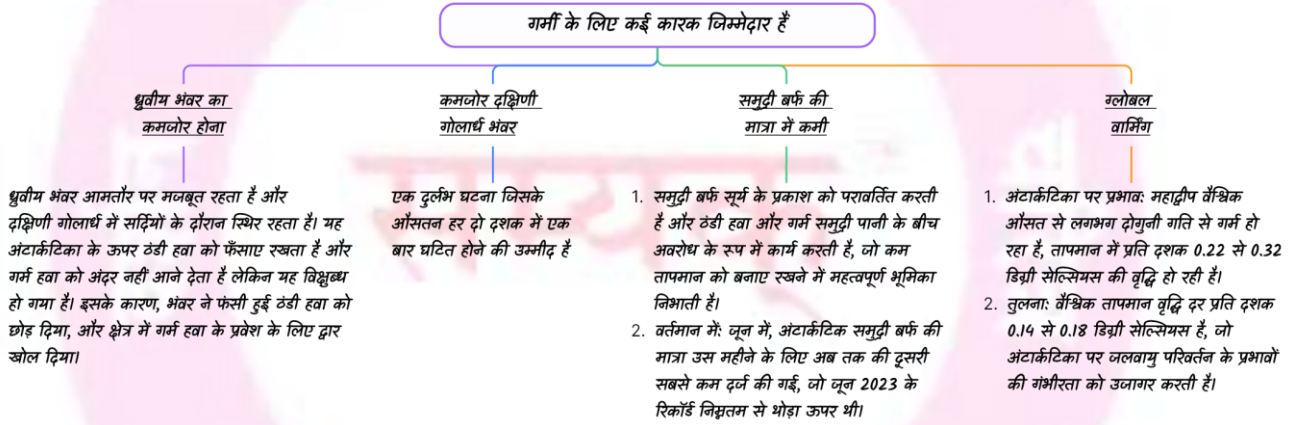
अंटार्कटिका में भीषण शीत ऋतु में गर्म लहरों का कारण क्या है, और इसके क्या परिणाम हो सकते हैं?

पाठ्यक्रम में प्रासंगिकता - सामान्य अध्ययन-III: पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण, पर्यावरण प्रभाव का आकलन।

सुर्खियों में क्यों ?

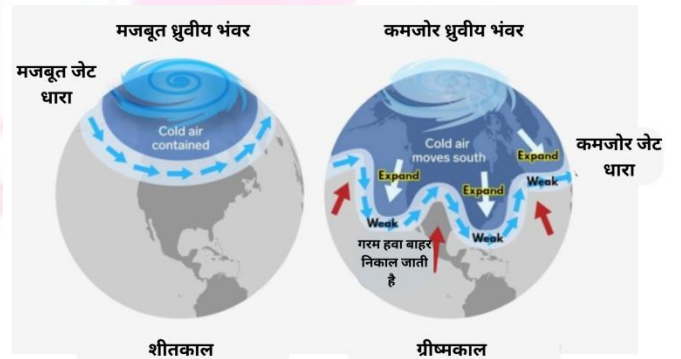
- अंटार्कटिका में भीषण सर्दी के दौरान अभूतपूर्व हीट वेव का सामना करना पड़ रहा है, जिसके कारण बर्फीले महाद्वीप का तापमान सामान्य से काफी अधिक है। इस घटना ने वैज्ञानिकों को चिंतित कर दिया है और वैश्विक जलवायु प्रणाली पर इसके संभावित प्रभावों के बारे में चिंता जताई है।
- वैश्विक प्रभाव: हीट वेव के दूरगामी परिणाम हो सकते हैं, जिसमें तेजी से बर्फ पिघलना, समुद्र का स्तर बढ़ना और वैश्विक महासागर परिसंचरण में व्यवधान शामिल हैं।

पृष्ठभूमि एवं प्रारंभिक परीक्षा के लिए उपयोगी तथ्य

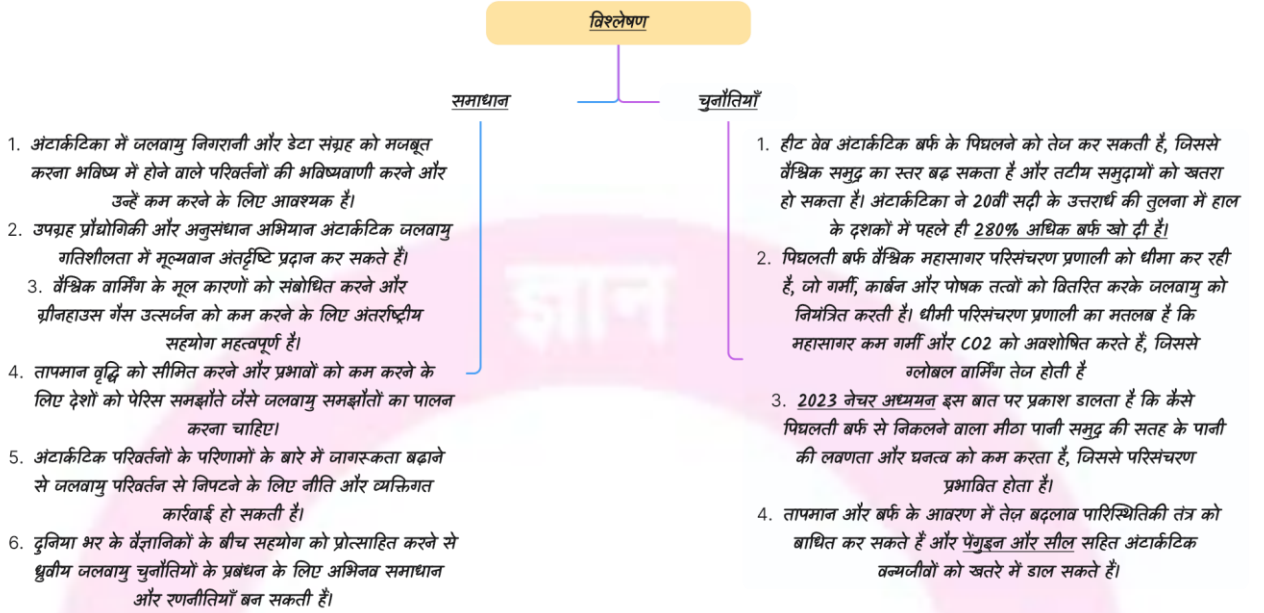


• ध्रुवीय भंवर क्या है?

- ध्रुवीय भंवर पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के आसपास कम दबाव और ठंडी हवा का एक बड़ा क्षेत्र है।
- "भंवर" शब्द हवा के वामावर्त प्रवाह को संदर्भित करता है जो ध्रुवों के पास ठंडी हवा को बनाए रखने में मदद करता है।
- यह हमेशा ध्रुवों के पास मौजूद रहता है, लेकिन गर्मियों में कमजोर हो जाता है और सर्दियों में मजबूत हो जाता है।
- हालांकि, उत्तरी गोलार्ध में सर्दियों के दौरान कई बार ध्रुवीय भंवर फैल जाता है, जिससे ठंडी हवा दक्षिण की ओर चली जाती है।



मुख्य परीक्षा के लिए विश्लेषण



प्रारंभिक परीक्षा 2010 से प्रश्न

प्र. वर्तमान में और निकट भविष्य में ग्लोबल वार्मिंग को कम करने में भारत की संभावित सीमाएँ क्या हैं?

1. उपयुक्त वैकल्पिक प्रौद्योगिकियाँ पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हैं।
2. भारत अनुसंधान और विकास में भारी धनराशि निवेश नहीं कर सकता।
3. कई विकसित देशों ने पहले ही भारत में अपने प्रदूषणकारी उद्योग स्थापित कर लिए हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- a) केवल 1 और 2
- b) केवल 2
- c) केवल 1 और 3
- d) 1, 2 और 3

प्रधानमंत्री ने उच्च उपज देने वाली, जलवायु अनुकूल और जैव-सशक्त फसलों की 109 किस्में जारी कीं

पाठ्यक्रम में प्रासंगिकता - सामान्य अध्ययन-III: मुख्य फसलें

सुर्खियों में क्यों ?

- प्रधानमंत्री ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में 109 उच्च उपज देने वाली, जलवायु-अनुकूल और जैव-सशक्त फसल किस्में जारी की हैं। यह भारत में टिकाऊ और लचीली कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, खासकर जलवायु परिवर्तन और पोषण सुरक्षा के संदर्भ में।

पृष्ठभूमि

- भारत का कृषि क्षेत्र कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें जलवायु परिवर्तन, मिट्टी का क्षरण और बढ़ी हुई पोषण सुरक्षा की आवश्यकता शामिल हैं। इसके जवाब में, भारत सरकार ऐसी फसल किस्मों के विकास पर जोर दे रही है जो न केवल अधिक उपज देने वाली हों, बल्कि जलवायु परिवर्तनशीलता के प्रति लचीली और आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर हों। इन 109 फसल किस्मों को जारी करना खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और किसानों की आजीविका में सुधार के व्यापक प्रयास का हिस्सा है।

प्रारंभिक परीक्षा के लिए उपयोगी तथ्य

• फोर्टिफिकेशन

- यह खाद्य उत्पादों में ऐसे पोषक तत्व जोड़ने की प्रक्रिया है जो प्राकृतिक रूप से मौजूद नहीं होते या अपर्याप्त मात्रा में मौजूद होते हैं।
- यह आमतौर पर विनिर्माण या प्रसंस्करण चरणों के दौरान किया जाता है।
- इसका लक्ष्य प्रमुख पोषक तत्वों के सेवन को बढ़ाकर आबादी में विशिष्ट पोषक तत्वों की कमी को दूर करना है।
- उदाहरण:

- आयोडीन की कमी को रोकने के लिए नमक में आयोडीन मिलाना।
- आटे या चावल को आयरन, फोलिक एसिड और अन्य बी विटामिन से समृद्ध करना।
- विटामिन डी की कमी को रोकने के लिए दूध में विटामिन डी मिलाना।



• बायोफोर्टिफिकेशन

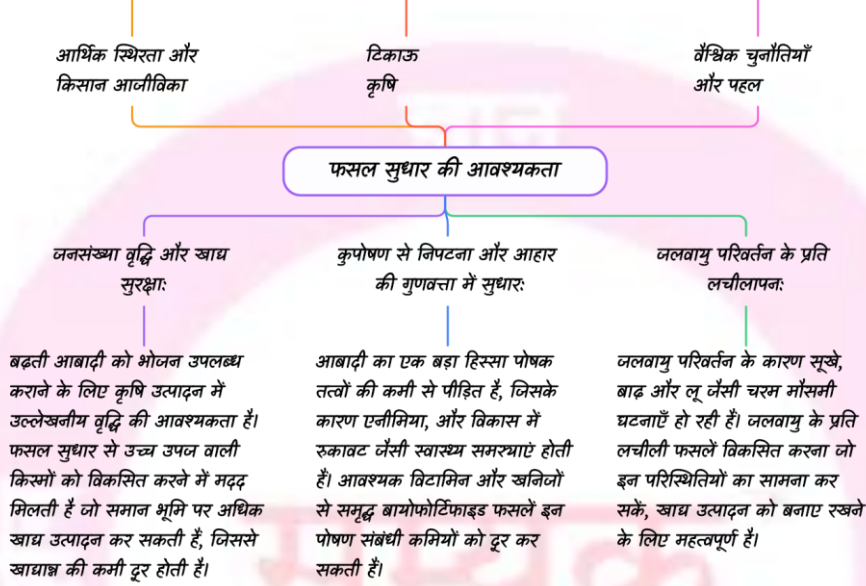
- दूसरी ओर, बायोफोर्टिफिकेशन, पौधों को प्राकृतिक रूप से विटामिन के उच्च स्तर वाले बनाने के लिए प्रजनन करके खाद्य फसलों की पोषण गुणवत्ता में सुधार करने की प्रक्रिया है।
 - यह पारंपरिक प्रजनन तकनीकों, आनुवंशिक संशोधन या कृषि संबंधी प्रथाओं के माध्यम से किया जा सकता है।
 - फोर्टिफिकेशन में प्रसंस्करण के दौरान खाद्य पदार्थों में पोषक तत्वों को शामिल किया जाता है, जबकि बायोफोर्टिफिकेशन में फसल की वृद्धि के दौरान पोषक तत्वों की मात्रा को प्राकृतिक रूप से बढ़ाया जाता है।
 - उदाहरण:
- चावल की ऐसी किस्में विकसित करना जो विटामिन ए से भरपूर हों (जैसे, गोल्डन राइस)।
 - मक्का (मकई) उगाना जिसमें जिंक और आयरन का स्तर अधिक हो।

मुख्य परीक्षा के लिए विश्लेषण

उच्च उपज देने वाली और लचीली फसल किस्मों से उत्पादन में वृद्धि हो सकती है, जिसका अर्थ है किसानों की आय में वृद्धि, विशेष रूप से विकासशील देशों में। बेहतर फसलें बाजार की मांग को अधिक प्रभावी ढंग से पूरा कर सकती हैं।

फसल सुधार से ऐसी किस्मों का विकास हो सकता है जिनके लिए पानी, उर्वरक और कीटनाशकों जैसे निवेश की कम आवश्यकता होती है, जिससे कृषि के पर्यावरणीय प्रभाव में कमी आती है।

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य जैसी वैश्विक पहल टिकाऊ खाद्य उत्पादन प्रणालियों और लचीली कृषि पद्धतियों की आवश्यकता पर जोर देती हैं। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में फसल सुधार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अलावा, खाद्य एवं कृषि संगठन जैसे संगठन भूख, कुपोषण और जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए फसल सुधार पर काम करते हैं।



प्रसारण सेवा (विनियमन) विधेयक 2024

पाठ्यक्रम में प्रासंगिकता - सामान्य अध्ययन-II: राजव्यवस्था

सुर्खियों में क्यों ?

- सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (एमआईबी) ने हाल ही में प्रसारण सेवा (विनियमन) विधेयक 2024 का मसौदा संस्करण उद्योग के कुछ हितधारकों के बीच प्रसारित किया।
- इस विधेयक ने यूट्यूब, इंस्टाग्राम और एक्स जैसे प्लेटफार्मों पर समाचार सामग्री के स्वतंत्र रचनाकारों के लिए विस्तारित विनियमन का प्रस्ताव दिया है, जिससे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर चिंताएँ बढ़ गई हैं।

पृष्ठभूमि एवं प्रारंभिक परीक्षा के लिए उपयोगी तथ्य

विधेयक के पीछे उद्देश्य और मंशा:

इस विधेयक का उद्देश्य वर्तमान में पारंपरिक टेलीविजन और रेडियो पर लागू विनियमों को इंटरनेट तक विस्तारित करना है, और इसे मौजूदा दिशा-निर्देशों को समेकित करने और प्रसारकों के बीच जवाबदेही बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

यह सभी बड़े प्रभावशाली लोगों, सामग्री निर्माताओं और राजनीतिक टिप्पणीकारों को कवर करता है, और भाषण को विनियमित करने का प्रयास करता है।

इसी कारण यह विधेयक रचनात्मक स्वतंत्रता को काफी हद तक कमजोर कर सकता है और भारत में अभिव्यक्ति की ऑनलाइन स्वतंत्रता को बाधित कर सकता है, जो दोनों ही एक अच्छी तरह से काम करने वाले और जीवंत लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण हैं।

विधेयक के प्रमुख प्रावधान

प्रसारक" शब्द की पुनःकल्पना:

"प्रसारक" शब्द की पुनःकल्पना: डिजिटल समाचार प्रसारकों को शामिल करने के लिए, उन्हें ऐसे किसी भी व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है जो "व्यवस्थित रूप से" समाचार और समसामयिक मामलों को ऑनलाइन प्रसारित करता है, जिसमें टेक्स्ट, वीडियो या ऑडियो के माध्यम से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म शामिल हैं। इसका मतलब है कि यूट्यूब, ट्विटर, ब्लॉगिंग पोर्टल या पॉडकास्ट पर समसामयिक मामलों और सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करने वाले टिप्पणीकार सभी इस विधेयक के अंतर्गत आएंगे।

डिजिटल समाचार प्रसारकों के लिए प्रावधान

1. इन प्रसारकों को सरकार को सूचित करना होगा
2. कार्यक्रम संहिता का अनुपालन करना होगा
3. शिकायत निवारण तंत्र स्थापित करना होगा
4. तीन-स्तरीय विमामक संरचना का पालन करना होगा।
5. समसामयिक विषयों के अलावा अन्य सामग्री के लिए, प्रसारकों को सामग्री मूल्यांकन समिति द्वारा पूर्व-प्रमाणन प्राप्त करना भी आवश्यक है।

दंड प्रावधान

विधेयक उपयोगकर्ताओं को कार्यक्रम संहिता के उल्लंघन के खिलाफ शिकायत दर्ज करने का अधिकार देता है, और केंद्र सरकार को ये अधिकार देता है -

1. वह जुर्माना लगा सकती है
2. प्रसारकों को प्रसारण बंद करने का निर्देश दे सकती है और
3. संप्रभुता, सुरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था, शालीनता, नैतिकता या विदेशी संबंधों के हित में प्रसारण पर रोक लगाना।

वैश्विक सामग्री निर्माता

वर्तमान मसौदा संभावित रूप से वैश्विक सामग्री निर्माताओं, समाचार प्रकाशकों और समसामयिक विषयों के टिप्पणीकारों को विधेयक के दायरे में लाता है।

मुख्य परीक्षा के लिए विश्लेषण

प्रावधानों से संबंधित मुद्दे

- **प्रेस स्वतंत्रता पर प्रभाव:** डिजिटल समाचार प्रसारकों के लिए विधेयक की व्यापक परिभाषाएँ और आवश्यकताएँ स्वतंत्र पत्रकारिता को बाधित कर सकती हैं और प्रेस स्वतंत्रता को सीमित कर सकती हैं।
- **अस्पष्टता पर चिंताएँ:** काफी शब्द जैसे "व्यवस्थित गतिविधि" को अस्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है, जो संभावित रूप से मनमाने ढंग से प्रवर्तन और नियंत्रण की अनुमति देता है।
- **व्यक्तिगत रचनाकारों पर प्रभाव:** व्यक्तिगत रचनाकारों को शामिल करके, विधेयक छोटे सामग्री उत्पादकों पर अनुचित बोझ डाल सकता है, जिससे नवाचार और अभिव्यक्ति में बाधा आ सकती है।
- **टीवी के समान नियम:** यह लागू करने से, छोटे पैमाने के कंटेंट क्रिएटर और स्वतंत्र पत्रकारों के लिए लागत में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। वहीं पर बाजार तक पहुँचने की गति कम हो सकती है। इससे गंभीर सेंसरशिप हो सकती है और मुक्त भाषण पर एक भयावह प्रभाव पड़ सकता है।
- **प्रवर्तन जटिलता:** विदेशी रचनाकारों और प्लेटफॉर्म पर भारतीय विनियमन लागू करना तार्किक चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है और अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के साथ टकराव का कारण बन सकता है। अलग-

अलग कानूनी ढाँचों और अधिकार क्षेत्र की सीमाओं को देखते हुए, विदेशी रचनाकारों पर अनुपालन लागू करना मुश्किल साबित हो सकता है।

- **एक ही मामले पर पहले से कानून मौजूद होना** : आईटी अधिनियम 2000 और आईटी नियम पहले से ही सोशल मीडिया मध्यस्थों को शिकायत निवारण तंत्र स्थापित करने, सरकारी आदेशों का पालन करने और फ्लैग की गई सामग्री के लिए नोटिस-ऑफ-टेकडाउन व्यवस्था संचालित करने के बारे में बात करते हैं।

समाधान

- **स्पष्ट परिभाषाएँ और दिशा-निर्देश**: सरकार को परिभाषाओं को परिष्कृत करना चाहिए और सुसंगत अनुप्रयोग सुनिश्चित करने और अस्पष्टता को कम करने के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश प्रदान करने चाहिए।
- **नीति स्पष्टता**: प्रमुख शर्तों और मानदंडों को स्पष्ट करने से मनमाने ढंग से लागू करने में कमी आ सकती है और विनियामक प्रक्रियाओं में पारदर्शिता बढ़ सकती है।
- **हितधारक जुड़ाव**: क्रिएटर और प्लेटफॉर्म सहित उद्योग के हितधारकों को मसौदा तैयार करने की प्रक्रिया में शामिल करने से अधिक संतुलित और प्रभावी विनियमन हो सकते हैं।
- **विनियमन और नवाचार को संतुलित करना**: एक जीवंत डिजिटल मीडिया पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के लिए विनियमन और नवाचार के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है।
- **नवाचार को बढ़ावा देना**: जवाबदेही सुनिश्चित करते हुए नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए एक सूक्ष्म दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।
- **वैश्विक उदाहरणों से सीखना**: डिजिटल मीडिया विनियमन के लिए अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणों का अध्ययन मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है और स्थानीय नीति निर्णयों को सूचित कर सकता है।

- **सिंगापुर**: पारंपरिक प्रसारक और ओटीटी सामग्री प्रदाता दोनों ही प्रसारण कानून के अंतर्गत आते हैं, जिसमें लाइसेंसिंग की आवश्यकता होती है, लेकिन पारंपरिक टीवी सेवाओं की तुलना में कम दायित्व होते हैं।
 - ओटीटी विनियमन: ओटीटी प्लेटफॉर्म को विनियमित करने के लिए सिंगापुर का दृष्टिकोण उद्योग के विकास के साथ विनियामक निरीक्षण को संतुलित करने का एक मॉडल प्रदान करता है।
- **संयुक्त राज्य अमेरिका**: संघीय संचार आयोग (FCC) प्रसारण मीडिया को विनियमित करता है, लेकिन ओटीटी प्लेटफॉर्म संघीय स्तर पर काफी हद तक अनियमित हैं।

अन्य खबरें

चर्चा का विषय

महत्वपूर्ण जानकारी

लसीका फाइलेरिया

- **सुर्खियों में क्यों** - लसीका फाइलेरिया के उन्मूलन के लिए द्विवार्षिक राष्ट्रव्यापी सामूहिक औषधि प्रशासन अभियान का दूसरा चरण हाल ही में शुरू किया गया। इस अभियान का उद्देश्य विभिन्न राज्यों के 63 स्थानिक जिलों को कवर करना है और लसीका फाइलेरिया के संक्रमण को रोकने के लिए निवारक दवाओं का घर-घर जाकर वितरण करना है।

लसीका फाइलेरिया के बारे में

- इसे आमतौर पर **एलीफेंटियासिस** के नाम से जाना भी जाता है
- यह एक **उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग (एनटीडी)** है
- **संचरण:** यह संक्रमित **क्यूलेक्स मच्छरों** के काटने से फैलता है, जो गंदे/प्रदूषित पानी में पनपते हैं।
- **कारक:** लसीका फाइलेरिया तीन प्रकार के परजीवी कृमियों के कारण होता है - **बुचेरेरिया बॅनक्रॉफ्टी (90% मामलों के लिए जिम्मेदार), ब्रुगिया मॅलेई और ब्रुगिया टिमोरी।**
- **लक्षण:** लक्षणों में सूजन, दर्द और क्षतिग्रस्त लसीका वाहिकाओं के कारण विकलांगता शामिल है, जिसके कारण हाथीपांव जैसी स्थिति उत्पन्न होती है।
- **आयु** - यह संक्रमण **बचपन में शुरू** होता है और **वयस्कता तक बढ़ता रहता** है, जिसके परिणामस्वरूप अपरिवर्तनीय दीर्घकालिक रोग की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।



उपचार और रोकथाम:

राष्ट्रव्यापी सामूहिक औषधि प्रशासन अभियान

वेक्टर नियंत्रण:
मच्छर नियंत्रण जैसी पूरक रणनीतियाँ

सूयता प्रबंधन:
सर्जरी, स्वच्छता उपाय और नैदानिक देखभाल पुरानी अभिव्यक्तियों के प्रबंधन और रोग की प्रगति को रोकने के लिए आवश्यक है।

निवारक कीमोथेरेपी के माध्यम से संक्रमण के प्रसार को रोककर लसीका फाइलेरिया का उन्मूलन संभव है

उल्का बौछार

- **सुर्खियों में क्यों** - **पर्सीड उल्कापात** जुलाई में शुरू हुआ और हाल ही में चरम पर देखा गया। **पर्सीड उल्कापिंड स्विफ्ट-टटल धूमकेतु** द्वारा छोड़े गए मलबे हैं।
- **इसके बारे में** - यह एक खगोलीय घटना है जिसमें कई उल्काएँ थोड़े समय में पृथ्वी के वायुमंडल से टकराती हैं।
 - उल्काएँ अंतरिक्ष की चट्टानें हैं जो पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करती हैं।
- **नामकरण** - उल्का वर्षा का नाम आमतौर पर उस तारे या नक्षत्र के नाम पर रखा जाता है जो आकाश में उल्काओं के दिखने के स्थान के करीब होता है।



माउंट
किलिमंजारो,
अफ्रीका की
सबसे ऊंची चोटी

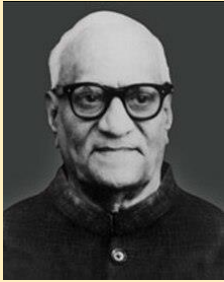
- **सुर्खियों में क्यों** - हाल ही में हिमालय पर्वतारोहण संस्थान (एचएमआई) की एक टीम ने माउंट किलिमंजारो के उहुरु शिखर पर 7,800 वर्ग फुट का भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अभियान को मिशन K2K (कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान से किलिमंजारो तक) के नाम से जाना गया।
- **माउंट किलिमंजारो के बारे में** - अफ्रीका की सबसे ऊँची चोटी (5,895 मीटर); तंजानिया में स्थित
- **विशेषता** - दुनिया की सबसे बड़ी स्वतंत्र पर्वत श्रृंखला, जिसका अर्थ है कि यह किसी पर्वत श्रृंखला का हिस्सा नहीं है।
- यह एक स्ट्रैटोवोलकैनो (राख, लावा और चट्टान से बने एक बहुत बड़े ज्वालामुखी के लिए एक शब्द) है।
- यह 3 शंकुओं से बना है: किबो (सबसे ऊँचा), मावेंजी और शिरा।
- किबो के क्रेटर रिम पर सबसे ऊँचा बिंदु उहुरु कहलाता है।



नीलकुरिंजी

- **सुर्खियों में क्यों** - इसे अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) की आधिकारिक लाल सूची में संकटग्रस्त प्रजातियों की सूची में शामिल किया गया है।
- **स्थान**: यह एक झाड़ी है जो केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु में पाई जाती है।
पश्चिमी घाट के शोला घास के मैदान - नीलगिरि पहाड़ियाँ, पलानी पहाड़ियाँ और मुन्नार की एराविकुलम पहाड़ियाँ, साथ ही पूर्वी घाट में शेवरॉय पहाड़ियाँ।
- नीलगिरि (नीले पहाड़) नाम इन फूलों के रंगों से लिया गया था।
- **खिलने की अवधि** - हर 12 साल में एक बार।
- **ऊंचाई**: स्थानीय रूप से कुरिंजी के नाम से जाने जाने वाले फूल 1,300 से 2,400 मीटर की ऊंचाई पर पाई जाती है।
- **विशेषता** - तमिलनाडु में रहने वाले पालियन आदिवासी लोग अपनी आयु की गणना के लिए इसका उपयोग करते थे।



<p>वी.वी. गिरि</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● सुर्खियों में क्यों - भारत के राष्ट्रपति ने श्री वी.वी. गिरि की जयंती पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की। <p>इनके बारे में</p> <ul style="list-style-type: none"> ● 1967 से 1969 तक उपराष्ट्रपति और 1969 से 1974 तक राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया ● विशिष्टता - स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में निर्वाचित भारत के प्रथम राष्ट्रपति। ● भारत रत्न पुरस्कार: राष्ट्रपति बनने के बाद 1975 में प्राप्त किया गया।  <p>प्रमुख योगदान</p> <ul style="list-style-type: none"> ● ऑल इंडिया रेलवेमेन्स फेडरेशन के संस्थापक सदस्य (1923)। ● 1928 में बंगाल नागपुर रेलवे हड़ताल का नेतृत्व किया। ● ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एआईटीयूसी) के दो बार अध्यक्ष। ● भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी। ● द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश शासन का विरोध करने पर गिरफ्तार किये गये।
<p>उदार शक्ति अभ्यास</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● भारत और मलेशिया का संयुक्त वायु अभ्यास ● प्रथम द्विपक्षीय वायु सेना अभ्यास - 2018 में आयोजित जिसमें अग्रिम पंक्ति के सुखोई-30 लड़ाकू विमानों का उपयोग किया गया था।
<p>सुपारी के बागानों में 'कोले रोग'</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● सुर्खियों में क्यों - कासरगोड स्थित केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने सुपारी के बागानों में 'कोले रोग' या फल सड़न रोग के नियंत्रण के बारे में किसानों को एक महत्वपूर्ण सलाह जारी की है। यह सलाह इस साल कई क्षेत्रों में लगातार बारिश के कारण इस रोग के बढ़ते प्रसार के जवाब में जारी की गई है। <p>कोले रोग के बारे में:</p> <ul style="list-style-type: none"> ● एक फफूंद जनित रोग जो मुख्य रूप से मानसून के मौसम में सुपारी की फसलों को प्रभावित करता है। ● कारक एजेंट: फाइटोफ्थोरा प्रजाति, एक प्रकार का जल फफूंद जो गीली परिस्थितियों में पनपता है। ● निवारक उपाय: रोग को नियंत्रित करने के लिए बोर्डो मिश्रण या मैडीप्रोपामिड 23.4% एससी जैसे कवकनाशी का छिड़काव करने की सिफारिश की जाती है। <p>सुपारी के बारे में</p> <ul style="list-style-type: none"> ● स्थान: कर्नाटक (सबसे बड़ा उत्पादक), केरल, असम, मेघालय, पश्चिम बंगाल और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के कुछ हिस्से। ● तापमान: 4 डिग्री सेल्सियस और 40 डिग्री सेल्सियस के बीच। ● वर्षा: प्रचुर और अच्छी तरह से वितरित होनी चाहिए। कम वर्षा में भी उग सकता है। ● मिट्टी: लैटेराइट, लाल दोमट और जलोढ़ मिट्टी 5.2 से 7.0 तक पीएच रेंज के

	<p>साथ सबसे उपयुक्त हैं।</p> <p>केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान (कासरगोड, केरल)</p> <ul style="list-style-type: none">• इसकी स्थापना 1970 में हुई थी• भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के तहत एक प्रमुख अनुसंधान संस्थान है, जो नारियल, सुपारी और कोको जैसी रोपण फसलों पर ध्यान केंद्रित करता है।
मेगाक्वेक	<ul style="list-style-type: none">• सुर्खियों में क्यों - जापान ने अपने दक्षिणी तट पर हाल ही में आए 7.1 तीव्रता के भूकंप के बाद पहली बार "मेगाक्वेक" एडवाइजरी जारी की है।• इसे जापान के दक्षिण-पश्चिम प्रशांत तट पर नानकाई गर्त पर जारी किया गया है।• मेगाक्वेक - यह 8 से अधिक तीव्रता वाले भूकंप होते हैं।• नानकाई गर्त - यह एक जलमग्न अवतलन क्षेत्र है, जहां यूरेशियन प्लेट फिलीपीन प्लेट से टकराती है।

